लेखक:- ब्रह्माकुमार सत्यनारायण
(टोली विभाग) ज्ञान सरोवर आबू पर्वत

रक्षा बन्धन का रहस्य

पात्र परिचय
गीता (मोहन की बहन)
संगीता (गीता की सहेली)
सीता (गीता की माँ)
मोहन (गीता का भाई)
ब्रह्माकुमारी नीता (आश्रम की दीदी)

श्रावण का महीना है चारों ओर हरियाली है। कहीं बारिस की फुंहार तो कही पानी के बहते कलकल करते झरने। कहीं शिव के मन्दिर में गीत, घंटे और घड़ियाल बज रहे हैं तो कहीं देश भक्ति के गीत और कहीं सजी है राखी की आकर्षक दुकानें।

गीता और संगीता दो सहेलियां जो कि महाविद्यालय की छात्रायें है अपने कॉलेज जाने की तैयारी कर रही है। महाविद्यालय का रास्ता जो कि बाजार से होते हुए जाता है। राखी का त्यौंहार होने के कारण भिन्न-भिन्न प्रकार की राखियों से सजी-सजायी दुकाने कोई भी बहन के मन को आसानी से आकर्षित कर सकती है।
चलते-चलते एक गीत सुनाई पड़ता है, बहना ने भाई की कलाई से प्यार बांधा है..
गीता:- क्यों संगीता कल तो रक्षा बन्धन है स्कूल से आने के वक्त हम भी अपने प्यारे-प्यारे भाईयों के लिए राखी खरीद कर ले चलेंगे।
गीता की बात सुनकर संगीता के चेहरे पर खुशी के बदले कुछ उदासी के चिन्ह दिखाई पड़ते हैं, क्योंकि संगीता को अपना कोई भाई नहीं है।
गीता:- फिर से संगीता की ओर देखते हुए पूछती है- क्यों संगीता आज तुम कुछ उदास नजर आ रही हो आखिर क्या बात है जरा बताओ तो सही!
संगीता:- गीता मैं आपको क्या बताऊं ? मुझसे बताया भी नहीं जाता। अपने माँ बाप को हम छह बहने हैं एक छोटा भाई था जो बचपन में ही चल बसा। राखी का त्यौंहार और राखी के गीत सुनकर किसकी दिल नहीं होगी कि अपने भाई की कलाई पर..
आंखों से आंसू बहाते आगे कुछ भी बोल नहीं पाती है
गीता भी उसकी बात सुनकर सोच में पड़ जाती है उसे भी अच्छा नहीं लगता।
गीता घर आने पर अपनी माँ से संगीता की सारी बात सुनाती है। माँ को भी संगीता की कहानी सुनकर उसके प्रति रहम पैदा होता है। पर क्या कर सकती है।
गीता का भाई जो कि अमेरिका में रहता है। राखी के एक दिन पहले ही अपने घर पहुंचता है। ब्रह्माकुमारी आश्रम का पक्का विद्यार्थी है। घर पहुंचने पर खुशी का माहोल छा जाता है।
मोहन:- घर पहुंचते ही अपनी माँ से कहता है ओमशांति माताजी
सीता:- आश्चर्य से! क्या कहा बेटा मेरी समझ में नहीं आया। ये ओमशांति क्या होता है ?
मोहन:- मम्मा ओमशांति का मतलब होता है कि मैं शांत स्वरूप आत्मा हूँ। ये शरीर मेरी कार है। ये तो विनाशी है। मैं आत्मा अविनाशी हूँ।
सीता:- तुम्हारी बातें तो बड़ी अच्छी लग रही है। मुझे तो सुनते-सुनते शांति का अनुभव होने लगा।
मोहन:- अपनी बहन गीता से:- क्यों गीता बड़ी खुश नजर आ रही हो। क्या बात है!
गीता:- जी भैया कल रक्षा बन्धन है आपके लिए अच्छी-अच्छी राखियां लेकर आई हूँ। कल बांधुंगी।
मोहन:- हाँ-हाँ क्यों नहीं परन्तु पहले आपको एक खुशी की बात सुनाता हूँ। कल हम सभी परिवार सहित एक ऐसे अनोखे स्थान पर चलेंगे जो आपने पहले कभी नहीं देखा होगा।
गीता:- हाँ भैया जरूर। बहुत ही उत्सुकता से अपने भाई मोहन से पूछती है कि मेरी एक सहेली भी है संगीता जिसको कोई भाई नहीं है। क्या हम उसको भी अपने साथ ले सकते हैं ?
मोहन:- अवश्य। क्यों नहीं।

दूसरे दिन सवेरे-सवेरे जल्दी उठकर सभी तैयार हो जाते हैं अपनी गाड़ी से संगीता को भी साथ में लेते हुए नजदीक के ब्रह्माकुमारी आश्रम पर पहुँचते है।

ब्रह्माकुमारी नीता:- सभी का प्यार से फूल देकर स्वागत करते हुए सभी से ओमशांति करती है और स्थान ग्रहण करने का ईशारा देती है।

मोहन:- (अपना परियच देते हुए) नीता दीदी मैं करीब पांच वर्ष से बाबा का बच्चा बना हुँ, अमेरिका में रहता हूँ, वहीं से मुझे बाबा का ज्ञान मिला। कल ही अपने लौकिक घर पहुँचा तो सोचा क्यों नहीं सभी परिवार वालों को बाबा का आश्रम दिखाने ले चलूं।

ब्रह्माकुमारी नीता:- बहुत ही खुशी की बात है कि आज रक्षा बन्धन के दिन आप सभी भगवान के घर पधारे। आप सभी बहुत भाग्यशाली ही नहीं पदमापदम भाग्यशाली आत्मायें हैं। आज आप सभी बाबा के घर में ही ब्रह्माभोजन करना वा राखी भी बंधवाना।

संगीता:- दीदीजी क्या मैं आपसे एक प्रश्न कर सकती हूँ !

ब्रह्माकुमारी नीता:- हाँ-हाँ क्यों नहीं। कुछ भी पूछना हो तो पूछ सकती हो।

संगीता:- मेरा प्रश्न है कि ये राखी का त्यौंहार क्यों मनाया जाता है ? इसका रहस्य क्या है ? राखी तो ब्राह्मण लोग बांधा करते थे और फिर बहनें अपने भाई को भी तो इसमें क्या अन्तर है ?

ब्रह्माकुमारी नीता:- आपने तो बहुत ही समझदारी से प्रश्न पूछा है बहुत ही अच्छी बात है उत्तर देने से पहले आपको बता दूं कि राखी बंधाने से पहले आप सभी का एक घंटे का ज्ञान का क्लाश होगा जिसमें आपके सभी प्रश्नों के हल मिलेंगे। राखी के महत्व के बारे में बताया जायेगा।

(बारह बजे का समय होता है सबसे पहले बाबा को भोग लगाया जाता है। सभी मेडिटेशन के लिए क्लास रुम में एकत्रित होते हैं। देखते ही देखते लाल लाइट हो जाती है और बहुत ही सुन्दर रहस्य युक्त राखी से सम्बन्धित गीत बजता है। गीतके लाइनें इस प्रकार होती है:- राखी ने लाज राखी जग में पवित्रता की..इसी दौरान दूसरा गीत बजता है :- दिव्यगुणों से सजी सजाई भैया राखी बहना लाई.. फिर तीसरा गीत:- पवित्रता का बन्धन मेरे भैया तुम लेकर जाना, दान विकारों का मेरे भैया तुम देकर जाना।)

सभी को असीम शान्ति एवं परमात्म प्यार का अनुभव होता है।

जैसे ही सफेद लाइट होती है तो सभी के चेहरे जैसे कि चमकते हुए दिखाई देते हैं। परन्तु संगीता जो कि गीता की सहेली है अब तक भी खोई हुई है। आंखें बन्द और आंखों से आसुंओं की धारा बह रही है। कुछ समय के बाद आंखें खोलती है।

ब्रह्माकुमारी नीता:- क्यों संगीता बहन कहाँ चली गई थी। क्या अनुभव किया ?

संगीता:- जैसे कि बोलने का दिल नहीं हो रहा हो, धीरे से कहने लगी जो अनुभव कभी नहीं किया जैसे कि मैं कहीं ओर उड़ रही थी। इस शरीर से अपने को कुछ अलग महसूस कर रही थी। और मेरे सामने एक सफेद वस्त्रधारी फरिश्ता आया और कहने लगा कि आज तो रक्षाबन्धन है तुम उदास क्यों हो। मैं खुदा दोस्त हूँ। मैं तुम्हारा भाई भी हूँ ये कहकर जैसे कि मेरी आँखों से ओझल हो गया। अब मेरी दिल करती है कि मैं उसे ही बार-बार देखती रहूँ। मानो कि मेरा सारा बोझ ही हल्का हो गया हो।

ब्रह्माकुमारी नीता:- बाबा ने बहुत ही अच्छा अनुभव आपको कराया है। अभी आपके सारे प्रश्नों के उत्तर भी मिलने वाले हैं। सबसे पहले हमें इस बात को जानने की आवश्यकता है कि मैं कौन हूँ। मैं यह शरीर नहीं मैं एक चैतन्य ज्योतिर्मय बिन्दू स्वरूप आत्मा हूँ। ये शरीर तो मेरा वस्त्र है। मैं इसकी मालिक हूँ। शरीर नाशवान है मैं अजर अमर अविनाशी हूँ।

राखी बांधने का रहस्य भी यही है कि आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप को जाने और उसमें स्थित हो। आत्मा का स्वधर्म ही है पवित्रता सुख शान्ति आनन्द प्रेम। आज ये सभी दिव्यगुण न होने के कारण आत्मा दु:खी और परेशान हो गई है। अब हम दिव्यगुणों की राखी बांधें और पवित्र और योगी बनें। राखी कोई केवल धागा नहीं है ये शुभ भावना, शुभ कामना की प्रतीक भी है। सबसे पहले अपने आत्म स्वरूप में स्थित हो यानि की आत्म स्वरूप का तिलक लगायें। दिव्यगुणों को धारण कर अपने मुख से मीठे बोल बोलें। मुख से कड़वे शब्दों का प्रयोग नहीं करें। परमपिता परमात्मा जो कि सभी मनुष्यात्माओं के मात-पिता बन्धु, सखा सब सम्बन्ध निभाने वाले है वो आकर इस राखी का रहस्य स्पष्ट करते हैं कि पवित्रता ही सुख शान्ति की जननी है। पवित्रता के बल से ही नई पावन श्रेष्ठाचारी सतयुगी दुनिया की स्थापना होती है। पवित्रता को धारण करने से आत्मा अपनी इन्द्रियों की मालिक राजा बन सकती है। मन, वचन, कर्म और स्वप्न में भी सम्पूर्ण पावन बनने का संदेश ये रक्षा बन्धन देता है। तो आओ हम सभी पवित्र और योगी बनने का दृढ़ संकल्प करें। सच्चे ब्राह्मण बन, मनोविकारों पर जीत पहन कर संसार को फिर से स्वर्ग बनायें।

संगीता:- आज मुझे राखी के असली रहस्य का पता पड़ा। अब तो मैं भी ये पवित्रता की सच्ची राखी बंधवाऊगी और अपनी जीवन आपके समान बनाऊंगी। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।

ब्रह्माकुमारी नीता:- अभी आप सभी को परमपिता परमात्मा की ओर से हम सभी को राखी बांधेंगी और साथ-साथ में आप से कुछ न कुछ बुराई का दान भी अवश्य ही लेंगी। जो भी आपमें मनोविकार या कमी और कमजोरी हो आज भगवान के रचे इस रुद्रज्ञान यज्ञ में स्वाहा करके जायें। ध्यान रखें दान की हुई चीज या विकार फिर से वापिस नहीं लिये जाते। कहा भी जाता है दे दान तो छूटे ग्रहण। साथ में बाबा से सभी वरदान लेकर जायेंगे।

(एक-एक कर सभी राखी बंधवाते हैं साथ में टोली और ईश्वरीय वरदान सभी प्राप्त करते हैं। बाबा के घर से भोग और ब्रह्माभोजन स्वीकार करते हैं और सभी एक साथ मिलकर बाबा के घर रोजाना आने का व ज्ञान सुनने का वायदा करते हैं।

सभी एक ही स्वर में ओमशान्ति कहकर अपने-अपने घर के लिए प्रस्थान करते हैं)

मीठी बहनों, प्यारे भाई, सबको बहुत बधाई।
फिर से रक्षाबन्धन की ये घड़ी सुहानी आई।।